

पद ९१

(राग: भैरवी - ताल: त्रिताल पंजाबी)

सख्या हा वैभव दो दिवसांचा। कनक कांति मदनांचा॥ध्रु.॥
क्षणाक्षणा आयुष्य जात हैं वाया। समय कठिन मरणाचा॥१॥
नाशवंत जग क्षणिक दृश्य हैं। मनिं आठव धरी याचा॥२॥
ज्ञानरूप मार्तांड कृपेनें। चिन्माणिक भेटेल साचा॥३॥